प्लेटो के साम्यवाद का सिद्धान्त

प्रश्न- प्लेटो के साम्यवाद के सिद्धान्त की विवेचना करें। आधुनिक साम्यवाद से यह कैसे भिन्न है?

उत्तर- प्लेटो ने आदर्श राज्य की परिकल्पना को मूर्त रूप देने के लिए जिस प्रकार न्याय और शिक्षा-पद्धति की व्याख्या की है, उसी प्रकार उसने एक नवीन सामाजिक व्यवस्था का भी चित्रण किया है, जिसे प्लेटो के "साम्यवाद सिद्धान्त" के नाम से जाना है। इस सामाजिक व्यवस्था के प्रतिपादन में उसका प्रमुख उद्देश्य यही था कि न्याय और शिक्षा-व्यवस्था के होते हुए भी बाह्य आकर्षण और सांसारिक दुर्बलताएँ उसके संरक्षक वर्ग के मार्ग में बाधा न बनें।

प्लेटो यह जानता था कि मनुष्य की आत्मा को विकृत करने वाले दो प्रमुख प्रलोभन होते हैं— कंचन तथा कामिनी। वह अपने आदर्श राज्य के शासकों को इन दोनों प्रलोभनों से परे रखना चाहता था, ताकि वे पूर्ण निःस्वार्थ भाव से तथा बिना किसी विचलन के राज्य की सेवा में लगे रहें।

हालांकि प्लेटो की यह विचारधारा मौलिक नहीं थी। उससे पूर्व भी यूनान में यह पाया जाता था। उदाहरणस्वरूप- स्पार्टा में स्त्रियों को राज्य-हित में उधार दिया जाता था। बालकों को 7 वर्ष की अवस्था के बाद राज्य द्वारा उनका भरण-पोषण किया जाता था। यहाँ सार्वजनिक जलपान गृह और भोजनालयों की व्यवस्था थी।

प्लेटो का साम्यवाद सिर्फ अभिभावक वर्ग पर ही लागू होता है। यहाँ अभिभावक वर्ग से अभिप्राय दार्शनिक शासक और सैनिक वर्ग से है। समाज का तीसरा, जो उत्पादक वर्ग है, वह इससे वंचित है। प्लेटो के साम्यवाद में दो प्रमुख बातें हैं — प्रथम अभिभावक वर्ग को व्यक्तिगत संपत्ति से वंचित करना, एवं द्वितीय - उन्हें वैवाहिक जीवन से वर्जित करना।

1 **सम्पत्ति का साम्यवाद** :— इसका अर्थ यह है कि शासकों और सैनिकों को किसी प्रकार की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं रखनी चाहिए। उन्हें न अपना घर होना चाहिए, न अपनी जमीन, और न सोना या चाँदी ही। वे राज्य द्वारा व्यवस्थित बैरकों में निवास करेंगे और सार्वजनिक भोजनालयों में भोजन करेंगे। उत्पादक वर्ग उनके खाने-पीने हेतु आवश्यक वस्तुएँ देगा, जिनका उपयोग वे व्यक्तिगत रूप से नहीं, बल्कि सामूहिक रूप से भोजनालय में करेंगे। प्लेटो के साम्यवाद का सिद्धान्त सिर्फ दो वर्गों पर ही लागू होता है, उत्पादक वर्ग पर नहीं। शासक और सैनिक वर्गों को राज्यकल्याणार्थ कंचन और कामिनी का मोह छोड़ने के लिए विवश किया जाता है।

एक व्यक्ति के हाथ में सम्पत्ति और शासन केन्द्रित रहने से वह पथ-भ्रष्ट होकर वह भीषण परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सकता है। उन्हें केवल उतनी ही जीवन सामग्री दी जाएगी जो कि उनके जीवन यापन के लिए पर्याप्त होगी। वे किसी भी प्रकार की संपत्ति का संचय नहीं कर सकेंगे और न ही उनका घर, अपना परिवार होगा।

2. **परिवार अथवा पत्नियों का साम्यवाद** :- प्लेटो ने संरक्षक वर्ग के लिए निजी परिवार को त्यागकर सारे राज्य को अपना वृहत् परिवार मानने के लिए कहा है। इसमें प्लेटो का उद्देश्य यह था कि अभिभावक वर्ग कंचन के समान कामिनी के मोह से भी मुक्त होकर अपने कर्त्तव्यों की उपेक्षा नहीं करें।

प्लेटो का मत है कि परिवार का मोह धन के मोह से भी अधिक प्रबल होता है। सेबाइन के शब्दों में, "सम्पत्ति की भाँति ही प्लेटो विवाह का भी उन्मूलन करता है

Scanned with CamScanner

प्लेटो का विचार है कि मोह पारिवारिक बंधनों के कारण जन्मता है। परिवार उन्मूलन के पक्ष में प्लेटो का एक और तर्क था — नारी जाति की मुक्ति। उस समय यूनान में नारी की स्थिति अत्यंत सोचनीय थी। उन्हें घर की चहार दीवारी से बाहर नहीं निकलने दिया जाता था। उनका कार्यकलाप केवल घरों को चलाने तथा बच्चों का लालन-पालन करना था। प्लेटो के विचार में यह अनुचित था। वह पुरुष और नारी को समान दर्जा देता था।

उपरोक्त धारणाओं के आधार पर प्लेटो पत्नियों के साम्यवाद पर विचार किया है उसके अनुसार अभिभावक वर्ग का अपना निजी परिवार नहीं होगा। शासक स्त्रियाँ सब पुरुषों की समान रूप से पत्नियाँ होंगी। उनकी संतान भी समान रूप से सबकी होंगी। न तो कोई माता-पिता अपने संतान को जान सकेंगे, और ना ही संतान अपने माता-पिता को। सुन्दर, स्वस्थ और बलशाली व्यक्ति ही राज्य की आवश्यकतानुसार सन्तानोत्पादन के लिए अस्थायी रूप से विवाह कर सकेंगे; और उनसे पैदा होने वाले बच्चे राज्य के संरक्षण में पाले जाएंगे।

उत्तम संतान पाने के लिए स्त्री-पुरुष का यौन सम्बन्ध विकसित यौनकाल में होना चाहिए। स्त्रियाँ 20 वर्ष से 40 वर्ष की अवस्था तक राष्ट्र के लिए संतान पैदा करेंगी, और पुरुष यौनावस्था के 25 वर्ष से 55 वर्ष की अवस्था तक राष्ट्र के लिए संतान पैदा करेंगे।

प्लेटो के साम्यवाद के उद्देश्य :- इसके निम्नलिखित उद्देश्य हैं —

i) **राज्य की एकता की रक्षा :-** राज्य में संघर्ष का मुख्य कारण आर्थिक असमानता, तथा ऊँच-नीच का भेद भाव है। अगर शासक वर्ग के पास से संपत्ति हट जाएगे तो इस समस्या का हल हो सकता है। निर्धन व्यक्ति शासक वर्ग को ईर्ष्या और द्वेष की भावना से नहीं देखेंगे।

ii) **राजनीतिक शक्ति तथा आर्थिक शक्ति को अलग-अलग रखना :-** यदि राजनीतिक तथा आर्थिक शक्तियाँ एक हाथ में केन्द्रित रहेंगी तो, उसका दुष्परिणाम निकलेगा। इसलिए राजनीतिक शुद्धता को कायम रखने के लिए वह राजनीतिक तथा आर्थिक शक्तियों को अलग-अलग हाथों में केन्द्रित रखना चाहता है।

iii) **संतति-सुधार :-** संरक्षकों के लिए निजी परिवार का निषेध करने में प्लेटो का उद्देश्य अपनी संतति का शारीरिक स्तर भी ऊँचा उठाना है। एक स्वस्थ्य, हृष्ट-पुष्ट तथा समधानुकूल युग्म के समागम के फलस्वरूप ही एक तेजस्वी, बलवान, वीर, मेधावी सन्तान का जन्म हो सकता है।

iv) **स्त्रियों को घर की दासता से मुक्त करना :-** प्लेटो पुरुष और स्त्रियों की समानता में विश्वास करता था दोनों में लिंग तथा शारीरिक बल की मात्रा में भेद है। पुरुष एक अधिक शक्तिशाली स्त्री है तथा स्त्री एक अधिक कमजोर पुरुष है। अतः दोनों को समाज में समान स्थान मिलना चाहिए। स्त्रियों को भी राजनीतिक तथा सार्वजनिक जीवन में भाग लेना चाहिए।

प्लेटो के साम्यवाद की विशेषताएँ :-

i) प्लेटो का साम्यवाद समाज के दो ही वर्गों शासक तथा सैनिक वर्गों पर ही लागू होता है, उत्पादक वर्ग पर नहीं।

ii) प्लेटो का साम्यवाद एक साध्य न होकर एक साधन है ~~प्लेटो के~~ उसके आदर्श राज्य का।

Scanned with CamScanner

iii) यह व्यवस्था केवल राज्य का हित-साधन है, वर्ग का हित साधन नहीं।

iv) प्लेटो के साम्यवाद व्यवस्था में विवाह व्यवस्था (अस्थायी विवाह) का ध्येय धार्मिक एवं या प्रेम, आकर्षण न होकर केवल राज्य के लिए स्वस्थ्य सन्तानोत्पत्ति है।

v) इस व्यवस्था में केवल पुरुष ही शासन के अधिकारी नहीं है, बल्कि स्त्रियाँ भी इस क्षेत्र में पुरुषों के समकक्ष हैं।

प्लेटो के साम्यवाद की आधुनिक साम्यवाद से तुलना :-

i) दोनों के बीच सबसे पहला भेद यह दिखाई पड़ता है कि प्लेटो के साम्यवाद का स्वरूप राजनीतिक है जबकि आधुनिक साम्यवाद की मुख्य प्रेरणा आर्थिक है। इसका प्रधान लक्ष्य समाज में से मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अन्त करके एक वर्गहीन समाज की स्थापना करना है।

ii) प्लेटो का साम्यवाद केवल दो वर्गों - सैनिकों तथा शासकों के लिए है, उत्पादकों के लिए नहीं। जबकि आधुनिक साम्यवादी व्यवस्था सम्पूर्ण समाज के लिए है। इसमें वर्ग-भेद के लिए कोई स्थान नहीं है।

iii) आधुनिक साम्यवाद केवल उत्पादन के साधनों का राष्ट्रीयकरण करता है, उपभोग की वस्तुओं पर व्यक्तिगत स्वामित्व का उन्मूलन यह नहीं करता, जबकि प्लेटो का साम्यवाद अपने अभिभावकों को उपभोग की वस्तुओं को संग्रह करने की भी अनुमति नहीं देता, जबकि उत्पादक के साधनों को व्यक्तिगत स्वामित्व के अधीन ही रहने देता है।

iv) आधुनिक ~~समाज~~ साम्यवाद का लक्ष्य एक वर्गहीन समाज की स्थापना करना है, परन्तु प्लेटो वर्ग-भेद को समाप्त करना नहीं चाहता, वह उसे अत्यंत आवश्यक मानता है।

v) आधुनिक साम्यवाद का अंतिम लक्ष्य राज्य का उन्मूलन कर देना है, जबकि प्लेटो का तो समग्र राज्य दर्शन ही राज्य की शाश्वतता में विश्वास के ऊपर आधारित है।

vi) आधुनिक साम्यवाद का सम्बंध केवल धन के उत्पादन तथा वितरण की व्यवस्था से है, पारिवारिक जीवन में यह कोई हस्तक्षेप नहीं करता, जबकि प्लेटो का धन के साथ-साथ पारिवारिक जीवन में भी हस्तक्षेप करता है।

vii) आधुनिक साम्यवाद एक अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन है, यह संसार भर के श्रमिकों को संगठित हो जाने के लिए ~~क्रान्तिकारी~~ आह्वान करता है, लेकिन प्लेटो के सामने ऐसा कोई अंतर्रा॰ लक्ष्य नहीं था। उसका साम्यवाद तो केवल एक नगर-राज्य तक ही सीमित था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिक साम्यवाद तथा प्लेटो के साम्यवाद में कुछ भिन्नता पाई जाती है। इन दोनों का प्रेरणा स्रोत भिन्न है, उद्देश्य भिन्न हैं, मान्यताएं भिन्न हैं, तथा साधन भिन्न हैं।

प्लेटो के साम्यवाद में दोष :- अरस्तू के अनुसार — i) निजी सम्पत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिए आवश्यक है; बिना अपनी सम्पत्ति के व्यक्ति निराश्रय तथा निस्सहाय अनुभव करता है।

ii) परिवार व्यक्ति का प्रथम पाठशाला है, जहाँ व्यक्ति प्रेम, सहयोग, तथा पारस्परिक एकता, आज्ञाकारिता आदि गुणों को अंगीकार करता है, अतः यह राज्य की एकता में बाधक न होकर साधक है।

iii) परिवार रखना सिर्फ अभिभावक वर्ग को ही क्यों मना किया गया है, उत्पादक वर्ग को भी इसे मना किया जाना चाहिए।

iv) संरक्षक वर्ग के सामान्य बच्चों का लालन पालन उतनी तत्परता के साथ कदापि नहीं हो सकती

Scanned with CamScanner

जितनी कि एक परिवार में दिखाई जाती है। माता-पिता के व्यक्तिगत और प्रत्यक्ष प्रेम के अभाव में उनके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो सकता।

iv) प्लेटो का साम्यवाद मानव नैतिकता और पवित्रता पर भीषण आघात करने वाला है। पिता को पुत्री, माता को पुत्र, भाई को बहन का ज्ञान न होने के कारण कोई किसी के साथ ~~साथ~~ सहवास कर सकता है।

v) राज्यों को वर्गों में विभक्त करके प्लेटो स्वयं ही उसकी एकता को अस्त-व्यस्त करता है।

vi) स्त्रियों की सामूहिक स्वामित्व से यौन क्षेत्र में अराजकता उत्पन्न हो जाएगी। एक सुन्दर ~~अच्छी~~ स्त्री को पाने की कामना अनेक पुरुष करेंगे और तब स्वभावतः संघर्षों और विवादों का जन्म होगा।

vii) प्लेटो के साम्यवादी व्यवस्था में उत्पादन और वितरण में अनुपात एक सा अनुपात नहीं रहेगा। इसमें कठोर परिश्रम करके उत्पादन करने वाला उतना ही उतना ही प्राप्त करेंगे, जितना कम श्रम करने वाला। यह उचित नहीं है।

viii) सामूहिक पत्नियों तथा पतियों की व्यवस्था सर्वथा अनैतिक तथा निन्दनीय है, यह सदाचार के समस्त नियमों के विरुद्ध है।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद भी ~~इस~~ प्लेटो के सिद्धान्त में ~~कुछ~~ ऐसे सत्य ~~है~~ के कुछ अंश हैं जिनके महत्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह इसके माध्यम से राजनीतिक शक्ति और आर्थिक शक्ति को एक हाथ में केन्द्रित नहीं होने देना चाहता था। वह जानता था कि समाज में इसका परिणाम बहुत भयंकर होगा। उसके समय में नारियों की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। वह इनकी स्थिति में सुधार लाना चाहता था। वह समाज में उनका उचित हक दिलाना चाहता ~~है~~ था। इन्हीं सब साधनों से एक आदर्श राज्य ~~का~~ जो दि रिपब्लिक का केन्द्र बिन्दु है, की प्राप्ति हो सकती है। अन्त में हम यह भी कह सकते हैं कि प्लेटो साम्यवाद के माध्यम से समाज में एकता स्थापित करना चाहता है।

Dr. Akhlakh Ahmad
(Assistant Prof.)
D.K. College, Dumraon.